: प्रथम अध्याय :

लक्ष्मी नारायण लालके "अंधाकुआ" नाटकमें लोकतत्त्वोंका विवेचन करनेसे पहले यह आवश्यक है कि "लोकतत्त्व" इस शब्दका अर्थ निरूपण हो -

"लोकतत्त्व" यह एक सामासिक पद है, जो "लोक" और "तत्त्व" इन दो शब्दोंसे बना हुआ है। "लोक" विशेषण है और "तत्त्व" विशेष्य है।

जिसका वास्तविक अर्थ है --- लोकका तत्त्व = लोकतत्त्व।

ऐसे लोकतत्त्वोंके बारेमें हम अक्सर सुनते हैं, लेकिन "अतिपरिचयात् अवज्ञा।"

इस न्यायके अनुसार लोकतत्त्वोंके बारेमें हमें निश्चित जानकारी नहीं होती। उनके बारेमें हमारे मनमें एक तरहकी जिज्ञासा होती है कि आखिर "लोकतत्त्व" याने निश्चित क्या है?

या सबसे पहले लोकतत्त्व" शब्द संबंधी समस्याका निराकरण आवश्यक हो जाता है।

"लोकतत्त्व" यह शब्द मौलिक रूपमें अत्यंत गूढ तथा व्यापक है। यही लोकतत्त्व शब्द स्वयं विस्तृत व्याख्याकी अपेक्षा रखता है, क्योंकि यह शब्द अर्थ की दृष्टिसे अत्यंत व्यापक शब्द है। उसका अपना एक निजीपन, स्वत्व एवं महत्त्व है।

"लोकतत्त्व" का अर्थ स्पष्ट करना इतना सरल कार्य नहीं है जितना की लगता है।

"लोकतत्त्व"की व्यापकता उसे सीमामें बांधनेसे इन्कार करती है क्योंकि लोकतत्त्वने अपनी व्यापकतामें अनेक ऐसी विशेषताओंको जन्म दिया है कि उन सबको एक परिभाषाके माध्यमसे व्यक्त करना बडा कठिन कार्य है।

लोकतत्त्व का तात्पर्य लोकवार्ताके विभिन्न तत्त्वोंसे है। लोकवार्ताके विभिन्न तत्त्वोंका निरूपण तभी संभव है, जब कि लोकका अर्थ, विस्तार एवं उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमिका स्पष्टीकरण हो जाए। अतएव सर्व प्रथम हम लोक शब्दके संबंधमें भारतीय तथा पाश्चात्य धारणाका निरूपण करेंगे।

भारतीय मत -----

लोक " यह शब्द अपनी कुछ निजी विशेषताएं लिए हुए हैं।

"लोक" शब्द अत्यंत प्राचीन है। वेदतक इसकी जड़ें बिखरी हुई है। भारतीय वाङ्मयमें भी लोक" शब्द अनेक अर्थोंमें प्रयुक्त हुआ है और लोक" शब्दको प्राय: सर्वत्र व्याख्यायित किया गया है।

"लोक" शब्द संबंधी अनेक मत मिलते हैं। उनमेंसे कुछ मत इस प्रकार हैं -------" लोक " शब्दकी व्युत्पत्ति ----

हिन्दी कोशमें "लोक" शब्दकी व्युत्पत्ति इस प्रकार बतलाई है।

सं० ✓ लोक(दर्शन) + घञ्

वैयाकरणोंके एक वर्गके अनुसार "लोक" शब्दकी व्युत्पत्ति-----

"लोकदर्शन " धातुमें प्रत्यय लगाकर की है।

"लोक" शब्दका अर्थ -- ऋग्वेद पुरुष सूक्तमें लोक" शब्द "जीव", "स्थान" दोनोंके लिए प्रयुक्त हुआ है तथा "जन" का भी समानार्थी है।

पाणिनीकृत अष्टाध्यायी, पतंजलिकृत महाभाष्य भरतमुनिकृत "नाट्यशास्त्र"में "लोक" शब्दको क्रमश: शास्त्रेतर, वेदेतर तथा सामान्य जनके संदर्भमें प्रयुक्त किया है।

महाभारतमें "लोक" शब्द "जनता" के अर्थमें प्रयुक्त हुआ है।

हिन्दी साहित्यकोशमें "लोक" अर्थ "संसार" और "जनसामान्य" दोनों लिया गया है। इसमें कहा गया है कि " शब्दकोशोंमें "लोक" शब्दके बहुत अर्थ मिलते हैं इनमें प्रमुखत: दो अर्थही विशेष प्रचलित हैं।

(१) इहलोक, परलोक और त्रिलोक।

(२) जनसामान्य। " १०

पहले "भुवन" और "स्थान" के अर्थमें प्रयुक्त होता हुआ यह शब्द अंतमें "जन" का पर्याय हो गया। अनेकानेक स्थालोंपर स्पष्ट रूपसे जनसाधारण "तथा समाज" के अर्थमेंही "लोक" का प्रयोग अधिकतर किया गया है।

इस प्रकार भारतीय साहित्य, संस्कृत साहित्य हिन्दी भक्ति साहित्य तथा भारतेंदु युगीन साहित्यमें "लोक" शब्द बार बार प्रयुक्त हुआ है।

इससे हम स्पष्ट रूपसे इस निष्कर्षतक पहुंचते हैं कि लोक" शब्द के व्दारा सामान्यत: जनसाधारण की प्रतीती होती है।

लोक शब्दकी परिभाषा ----

"" लोक हमारे जीवनका महासमुद्र है। उसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोकयान राष्ट्रका अमर स्वरूप है लोक का अभिव्यक्त स्वरूप याने वह सामान्य जनसमूह है। "" १.

डा. रविंद्र भ्रमरने लोककी विस्तृत व्याख्याकी है –

"लोक शब्दका अर्थ ग्राम्य या जनपदीय समझा जाता है। किंतु इस दृष्टिसे केवल गांवोंमेंही नहीं, वरन् नगरों, जंगलों, पहाडों और टापूओंमें बसा हुआ वह मानव समाज जो अपनी परंपरा प्रथित, रीति--रिवाजों और आदिम विश्वासोंके प्रति आस्थाशील होनेके कारण अशिक्षित एवं अल्प सभ्य कहा जाता है। लोक" का प्रतिनिधित्व करता है।" २.

संक्षेपमें देहातोंमें तथा शहरोंमें रहनेवाले ऐसे लोग जो परंपराधारित जीवन जीते हैं। वेद पूर्व कालसे चला आया, वेद संस्कृतिसे भिन्न तथा परंपरासे चला आया जीवन अपनानेवाला समूह याने "लोक"।

"लोक" शब्दसे संबंधित पाश्चात्य मत ----

"लोक" का पश्चिमी विव्दानोंको क्या अर्थ अभिप्रेत है? यह भी देखना जरुरी है, क्योंकि "लोक" का जो विशेष अर्थ लिया जाता है, उसका मुख्य संबंध पाश्चात्य विचारधारासे भी है।

आधुनिक कालमें लोक"का अर्थ अंग्रेजीके " Folk " शब्दसे लिया जाता है । इस प्रकार "फोक" और "लोक" पर्यायवाची शब्द है । फोकके लिए लोक शब्द युक्तियुक्त है ।

पश्चिमी "फोक" शब्दकी व्युत्पत्ति एंग्लोसैक्सन शब्द फोक (Folc) से मानी जाती है ।

भलेही डॉ॰ रामशरण गौड का विचार है -----
वास्तमवें "लोक" अंग्रेजी शब्द "फोक" का न हिन्दी रूपांतर है न पर्यायवाची शब्द ही है । " १॰

लेकिन इसकी जगह आपने दूसरा पर्याय नहीं सूझायाहै । आपने आगे कहा है, " जिन भारतीय विव्दानोंने लोक "को फोक का पर्यायवाची या अनुवाद स्वीकार किया है । उनकी सभ्यताकी मूल्यांकन दृष्टि प्राय: पाश्चात्य दृष्टिकोण ही है । " २॰

इसलिए डॉ॰ रामशरण गौडका मत ग्राह्य नहीं है ।

इसलिए हिन्दी शब्द "लोकतत्त्व" के लिए अंग्रेजीमें "फोक एलिमेंट" (Folk Element) शब्द प्रयुक्त होता है ।

संक्षेपमें हिन्दी शब्द "लोक" शब्दके लिए अंग्रेजी शब्द "फोक" (Folk) और हिन्दी शब्द "तत्त्व" के लिए अंग्रेजी शब्द एलिमेंट (Element) ये समानार्थी शब्द ही मुझे अधिक उपयुक्त जान पडते हैं ।

इस तरह पहले लोक और बादमें तत्त्व शब्द का अर्थ देखा । लोक एक पारिभाषिक अर्थमें ग्रहण किया जाता है।

भारतीय मत = लोकतत्त्व शब्द का अर्थ पहलेही हमने देखा कि लोक का तत्त्व याने लोकतत्त्व है। यहीं लोकतत्त्व वस्तुत: लोक की परंपराओंका शास्त्र है। वे परंपराए तो कालक्रमानुसार एक युगसे दूसरे युग, दूसरेसे तीसरे, इसी प्रकार हस्तांतरित होकर आजके युगके लोकजीवनमें भी विद्यमान है।

भारतीय पुराविद् डा. वासुदेवशरण अग्रवालने "लोकवार्ता" शब्दका प्रयोग किया है –

तो डा. उषा डोगरा ने लोकतत्त्व और लोकवार्ता को समान मानते हुए कहा है " लोकवार्ताके भिन्न भिन्न तत्त्व हैं उन्हीं विभिन्न तत्त्वोंको लोकतत्त्व भी कहते हैं। वास्तवमें "लोकतत्त्व" और "लोकवार्ता" तत्त्व एक ही है। "[१]

अन्य विद्वानोंको भी संदेह कि फोक एलिमेंट (Folk Element) इस अंग्रेजी शब्दके लिए हिन्दीका " लोकतत्त्व " शब्द प्रयोग करें, या " लोकवार्ता" शब्दका ?

लेकिन तात्त्विक अर्थसे "लोकतत्त्व " और "लोकवार्ता" शब्दोंकी तुलना करें तो "लोकवार्ता" शब्द में अव्याप्तिका दोष है। इसलिए मैंने फोक एलिमेंट" अंग्रेजी शब्दके लिए "लोकतत्त्व" हिन्दी शब्द योग्य समझकर अपनाया है।

पाश्चात्य मत ----- " लोकतत्त्व" शब्द द्वारा अभिप्रेत अर्थ देखनेसे डॉ. बार्कर की "फोक" संबंधी व्याख्या देखना है—

फोक" से सभ्यतासे दूर रहनेवाली किसी पूरी जातिका बोध होता है। .... जिसके पास संस्कृतिकी किरणें आज भी नहीं पहुंची है, जो अर्धसभ्य है या असभ्य है, जो अशिक्षित, ग्रामीण और देहाती है।

डा॰ बार्करके फोक" संबंधीके विचारोंमें और हिन्दीके प्रसिध्द विव्दान डा॰हजारी प्रसाद व्दिवेदीजीके मतमें साम्य है ।

आप जनपदमें लिखते हैं कि " लोक के अंतर्गत वह समस्त सरलस्वाभाविक, मानव समाज समाविष्ट है, जो आडंबरमयी विलासितासे परे रहकर प्राकृतिक जीवन व्यतीत करता है। " १.

इस दृष्टिसे भारतीय और पाश्चात्य विचारधाराओंमें लोक" शब्दके अर्थमें मतैक्य दिखाई देता है ।

सभी विव्दानोंके विचारोंका केंद्रबिंदु " आदिम विश्वास एवं रीति परंपराए ही है । यही मेरे शोधका मुख्य आधार है ।

इस दृष्टिसे अबतक हमने पहले भारतीय और तदूनंतर पाश्चात्य विव्दानोंके लोक के अर्थ संबंधी विभिन्न मतोंको देखा । अब रह गया शब्द "तत्त्व" ।

तो "तत्त्व" संबंधी क्रमश: भारतीय मत और तदूपश्चात पाश्चात्य मत देखानेवाली हूं ।

रामचंद्र वर्मा कृत प्रामाणिक हिन्दी कोशमें "तत्त्व" का अर्थ इस प्रकार दिया है -------

'तत्त्व'--- पुं॰(सं॰) मुख्य और महत्वपूर्ण,वास्तविक या मौलिक बात, गुण,अंश,आधार, असलियत मूलकारण ,सार, वस्तू या भाग ।

तो पाश्चात्य मतके अंतर्गत देखानेसे पता चलता है कि इंग्लिशमें "तत्त्व" शब्दके लिए एलिमेंट (Element) सब्स्टेन्स (Substance) मैटर (Matter) शब्द अस्तित्वमें हैं।

लोकतत्व शब्दका सीमाके भीतर अभिव्यक्तिके विभिन्न रूपोंका समावेश होता है । इसके अंतर्गत वह सारा ज्ञान सम्मिलित है जो मौखिक रूपसे संचालित होता है ।

---

(१) जनपद --डा॰ हजारीप्रसाद व्दिवेदी --- वर्ष १, अंक १, पृ॰ ६१

"लोकतत्त्व के विस्तारमें लोककला, लोकाचार, लोकविश्वास, लोकनृत्य, लोकगीत, लोकचेष्टा, लोकवाणी आदि विषयोंके साथ ही लोकसाहित्य का नाम पानेवाली अभिव्यक्तिके अन्य मौखिक रूप भी विद्यमान है। क्रमशः लोकतत्त्वके अर्थकी सीमा बढती गई है, और यह साधारण जनताके साथ ही साथ ग्रामीण तथा नगर दोनों क्षेत्रोंमें व्याप्त हो गया है। कालांतरमें यह केवल नगर तथा ग्रामीण क्षेत्रकी सीमासे अलग हटकर समस्त लोकके ज्ञानके रूपमें स्वीकार किया जाने लगा।"[१]

लोकतत्त्वोंके संबंधमें अधिकांश विद्वानोंकी धारणा है कि इसके विभिन्न रूपोंकी मूल चेतना आदिम मनुष्यकी अभिव्यक्तिमें ही पायी जा सकती है।

"लोकतत्त्व" शब्दका अभिप्रेत अर्थ देखनेके बाद मैं अब लोकतत्त्वकी परिभाषा देखनेवाली हूं।

"लोक" शब्द के अर्थमें जिस तरह वृद्धि, विस्तार होता गया, ठीक उसी तरह "लोकतत्त्व" शब्द की प्रारंभिक परिभाषा पहले संकीर्ण थी किंतु क्रमशः वह व्यापक होती चली गई। लोकतत्त्वोंकी व्याख्या करना इतना सरल काम नहीं जितना कि लगता है, क्योंकि लोकतत्त्वोंकी सीमा बहुत व्यापक है। ऐसा होनेपर भी अनेक विद्वानोंने लोकतत्त्व को परिभाषाके अंतर्गत बांधनेकी कोशिश की है।

परिभाषा ----

(१) डा. सत्येंद्रने लोकतत्त्वोंकी परिभाषा इस प्रकारसे स्पष्ट की है, "हम अपनी दृष्टिसे यह कह सकते हैं कि लोक मनुष्य समाजका वह वर्ग है, जो आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और जो एक परंपराके प्रवाहमें जीवित रहता है। ऐसे लोककी अभिव्यक्तिमें जो तत्त्व मिलते हैं, वे लोकतत्त्व कहलाते हैं।"[२]

---

(१) हिन्दीके आंचलिक उपन्यासोंमें लोकतात्त्विक विमर्श --डा. उषा डोगरा-- ---पृ.८८.

(२) मध्ययुगीन हिन्दी साहित्यका लोकतात्त्विक अध्ययन---डा.सत्येंद्र पृ.३.

(२) लोक की, लोकके लिए, लोकव्दारा की गई समस्त मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति याने लोकतत्त्व हैं।

(३) जन्मसे लेकर मृत्युतक की लोक की जो जो अभिव्यक्तियाँ होती हैं, वे लोक तत्त्व है और इसके अंतर्गत वह सारा ज्ञान सम्मिलित है जो मौखिक रूपसे संचालित होता है।

(४) "लोकतत्त्व" याने लोक समाजकी --- जो असंस्कृत असभ्य, बर्बर, शास्त्रीयता और पांडित्यसे अस्पृष्ट, नागरिक या सभ्य संस्कृतिके प्रवाहसे बिलकुल अछूत, अपढ, ग्रामीण, अकृत्रिम, परंपरागत संस्कृतिके तत्त्वोंके वाहक, केवल मौखिक रूपसे सांस्कृतिक भाव भावनाओंका आदान प्रदान करनेवाले लोकसमाज की ----समस्त आशाओं, आत्मभावोंकी अभिव्यक्ति करनेवाले जो तत्त्व मिलते हैं , लोकतत्त्व है।

इन विविध परिभाषाओंको देखनेके बाद हम इस निष्कर्षतक पहुंचते हैं कि लोक के तत्त्व = लोकतत्त्व। जो बडेही जटिल लगते हैं।

उपर्युक्त समस्त लोकतत्त्वोंका वर्गीकरण सोफिया बर्न ने इस तरह किया है -------------

लोकतत्त्व

(१) लोकविश्वास और अंधपरंपराएँ।

(२) रीतिरिवाज तथा प्रथाएँ।

(३) लोकसाहित्य।

ये विभिन्न लोकतत्त्व है। जो मेरे शोध प्रबंधके विषय है।

. . . . . .

लोकतत्त्वोंके अध्ययनकी आवश्यकता ------

लोकतत्त्वोंके विरोधक या आधुनिक विचारोंवाले लोकतत्त्वोंके संबंधमें यह आक्षेप लेते हैं कि -----

(१) लोकतत्त्वोंके अध्ययनसे क्या फिर हमें प्राचीन जमानेमें, प्राचीन वातावरणमें एक बार फिर जीना पडेगा ?

(२) क्या उनके पिछडे विचार हमें आत्मसात करने होंगे ?

(३) क्या फायदा है आजके विज्ञान युगमें इन लोकतत्त्वोंके अध्ययन का ?

(४) क्या लोकतत्त्वोंको हम मात्रा संग्रहालयोंतक रखेंगे ?

लोकतत्त्वोंका अध्ययन हमारे लिए कई दृष्टियोंसे महत्त्वपूर्ण है। लोकतत्त्वोंका अध्ययन केवल अतीतमें, भूतकालमें फिरसे जीनेके लिए करना, इतना संकीर्ण विचार इनके अध्ययनके पीछे बिलकूल नहीं है। लोकतत्त्वोंका अध्ययन करनेके पीछे विशाल दृष्टिकोण है और वह यह कि ---------

(१) लोकतत्त्व हमारी राष्ट्रीय संपत्ति है। हमारा मूल धन है।

(२) भूतकालीन लोकतत्त्वोंका स्वरूप समझाकर वर्तमानकालीन नये नये जीवन संदर्भोंमें आकलन करके, भविष्यमें उन जीवन संदर्भोंका लाभ कर लेना साथ ही साथ लोकतत्त्वोंके अध्ययनकी आवश्यकता आज अनेक कारणोंसे बढ ही रही है।

(३) बढती हुई औद्योगिकतासे आहत व्यक्ति दूसरे व्यक्तिसे कट रहा है। एक दूसरे व्यक्तिसे जुदा, अलग हो रहा है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि हम जिस पाश्चात्य संस्कृतिका अंधानुकरण कर रहे है, वह विघटन--कारी संस्कृति है। जब कि हमारे इन लोकतत्त्वोंकी नींव है--- समूह, समूहमन तथा एक दूसरेको जोडनेकी प्रक्रिया इन लोकतत्त्वोंमें निहित है और आज हमें इसकी बहुत जरूरी है। जब कि मनुष्य एक यंत्र बन रहा है और

जरूरत

साथ ही जब हम अपना पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं ।

अब तो लोकतत्त्वोंकी आवश्यकता अधिक बढ गई है ।

(४) आज हमें अपने स्वाभाविक रससे परिचित होनेकी इच्छा पैदा हो रही है ।

(५) हम अपनी रुचि बदलना चाह रहे हैं । हमारी अस्मिता आज जागृत हो रही है । इतनाही नहीं सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि लोकतत्त्वोंसे राष्ट्रीय एकात्मता निर्माण करनेका एक बहुत शक्तिशाली साधन लोकतत्व ही हैं । जब कि राष्ट्रीय एकताकी हमें आज बहुत आवश्यकता है ।

साथ ही साथ मनुष्यकी वास्तविक पहचान निकटतासे करा देनेका सामर्थ्य इन लोकतत्त्वोंमे हैं ।

(६) इन शक्तिशाली लोकतत्त्वोंव्दारा प्राकृतिक जीवन उपलब्ध होता है क्योंकि संस्कृतिकी जीन सीढियोंसे मुनुष्य गुजर चुका है । वहाँ उसने अपने चेहरेपर कृत्रिमताका नकाब ओढ रखा है । जब कि लोकतत्त्वोंमें मुक्त, सहज, प्राकृतिक मनकी बात होती है । जो इन लोकतत्त्वोंकी आधारशीला है ।

थोडेमें ये लोकतत्व मानवी जीवनको सीधे स्पर्श करते हैं ।

अब हम लोकतत्त्वोंका साहित्यकी दृष्टिसे महत्त्व देखेंगे -----

डा• विमलेश कांतिने लोकतत्त्वोंके अध्ययनकी साहित्यिक महत्ता इस प्रकार बताई है," इन लोकतत्त्वोंका अध्ययन कई दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण है — जब हम अपने अतीतको समझना चाहते हैं तो प्राय: इतिहास को शरण लेते हैं । किंतु तथ्य तो यह हैं कि हम इतिहाससे एक वर्ग विशेषके बारेमें, उसके ऐश्वर्य के बारेमें , उसके राज्य प्रबंध आदिके बारेमें ही जान पाते हैं और यह राज वर्ग है ।

यदि हम जन वर्ग के बारेमें इतिहाससे जानना चाहते है तो असफल रह जाते हैं । लोक संस्कृतिके बारेमें हम कुछ नहीं जान पाते, जिसके हम स्वयं एक सदस्य है, और यदि हम जनवर्गके बारेमें जानना चाहते हैं तो हमें इन्हीं

लोकतत्त्वोंपर दृष्टिपात करना पडता है । आगे भी हम जब हम चाहते हैं कि हमारे साहित्यके व्दारा हमारी बादकी पीढी साहित्यके माध्यमसे लोक संस्कृतिका ज्ञान प्राप्त करें तो हमें अपने साहित्यके उपादान भी इन्हीं लोकतत्त्वोंसे ढूंढने पडते है, क्योंकि लोकतत्व ही जनसंस्कृतिका दर्पण है ।

यदि हम यह जानना चाहते हैं कि लोकमें किस प्रकारके विश्वास प्रचलित हैं? लोककी क्या प्रथाएं हैं? लोक किस प्रकार आनंद और विषादकी अपनी स्थितियोंमें अनुभूतियोंको प्रकट करते हैं? तो हमें लोकतत्त्वोंपर ही ध्यान देना पडता है । ॰ ।॰

डा॰ सत्येंद्रने भी कहा है--- कि यदि हम किसी महान साहित्यके मर्मको जानना चाहते हैं तो भी लोकतत्त्वोंका उस साहित्यमें शोध अत्यंता--वश्यक है , क्योंकि " वाणी का यथार्थ मूल स्त्रोत लोकोद्‌गार का साधारण क्षेत्र है । "

किसी कविकी महत्ताका यथार्थ ज्ञान हम उसकी लोकतात्त्विक शैलीको ही लेकर कर सकते हैं । अपने साहित्यमें साहित्यकार जितने ही लोकतत्त्वोंको लेकर चलेगा । उसका साहित्य उतनाही महान, सर्वसम्मत सार्वकालिक होगा और जनवर्गमें उसका उतनाही प्रचारित होगा जो किसी भी कविकी महानता की परख का निकर्ष है । साहित्य यदि लोकविमुख होकर लिखा गया है तो कभी भी वह आगे उतना महत्व का नहीं रहेगा, जितना लोकतत्त्व युक्त होकर होता । उसकी स्थिति साहित्य--इतिहास की सूची मात्रामें ही रहेगी । उसका महत्व केशव की रामचंद्रिका के तुल्य होगा, तुलसीके रामचरित मानस की भांति नहीं । मानस आज इतना जनप्रिय इसीलिए है क्योंकि व ह जनमानसका रहस्योद्‌घाटन करता हैं । मानव जीवन के विश्वास और उसकी परंपराएं उसमें निहित हैं लक्ष्मीनारायणलालके अंधा कुआं नाटकका लोक तात्त्विक अध्ययन भी इसी दृष्टिसे महत्वपूर्ण है ।

धाकुआं नाटक के लोकतात्त्विक अनुशीलन का सांस्कृतिक तथा समाज शास्त्रीय महत्व है।

प्रस्तुत शोध निबंध की व्याप्ति -----

धाकुआं नाटकमें उन समस्त लोक का सारा ज्ञान सम्मिलित है जो मौखिक रूपसे संचालित होता है। तथा उनका भी इस नाटकके अध्ययनमें बडा ही महत्वपूर्ण हाथ है ------ ऐसी दस्तकारियां एवं तकनीकी विधियां यहां सम्मिलित मिलेगी जो परस्पर अनुकरण व्दारा सीखी जाती है।

उपर्युक्त कथनके आधारपर धाकुआं नाटकके लोकतत्त्वोंका अध्ययन करते वक्त निम्नलिखित लोकतत्त्व सम्मिलित किए हैं --------

(१) लोकभाषा, मुहावरे, कहावतें, अश्लीलतत्व- गालियां।
(२) लोकविश्वास। (३) लोकउपमान (४) लोकगीत।

इन्हीं लोकतत्त्वोंका समग्र अध्ययन करना है।

- - - - -000- - - - - -